https://www.echetana.com/Vol.-09, No.-02, March-June 2024, pp. 08-10

CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृति, उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन

ललिता रानी
पी.एच.डी. शोधार्थी
डॉ. सुमन रानी
आचार्य
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
Email - lalitachahar7494@gmail.com, Mob- 8209565860

First draft received: 05.06.2024, Reviewed: 11.06.2024, Final proof received: 19.06.2024, Accepted: 29.06.2024

सार संक्षेप

प्रस्तुत शोध में "राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृति, उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन किया गया हैं। अध्ययन में प्राप्त आकडों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गए है। यह अध्ययन राजस्थान के श्री गंगानगर के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कुल 200 अध्यापक एवं 200 विद्यार्थियों पर किया गया है। अध्ययन में स्वनिर्मित शिक्षक शैक्षिक नवाचार अभिवृत्ति मापनी, उत्तरदायित्व मापनी, शिक्षक व्यावसायिक प्रतिबद्धता मापनी (डॉ. रविन्दर कौर, डॉ. सरबजीत कौर 'रानू' एवं श्रीमती सरवजीत कौर बराड़) तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृति, उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता राजकीय उच्च अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृति प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जबकि उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर है।

मुख्य शब्द : *शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृति, उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता, शैक्षिक उपलब्धि, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, शिक्षक, विद्यार्थी आदि।*

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका संपूर्ण विकास समाज में ही संभव है। विकसित समाज के लिए यह आवश्यक है कि उसका प्रत्येक नागरिक शिक्षित एवं जागरुक हो। शिक्षित मनुष्य उपयोगी एवं व्यावहारिक ज्ञान का भण्डार रखता है। ज्ञान की प्राप्ति आजीवन चलने वाली शैक्षिक प्रक्रिया से होती है। शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है। वि(ानों ने इस प्रक्रिया के तीन अंग माने हैं– शिक्षक, शिक्षार्थी तथा पाठ्यवस्तु। इन तीनों अंगो में शिक्षक का स्थान सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। यद्यपि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था मे बालक को शिक्षा की प्रक्रिया में प्रथम स्थान देने की बात कही गई है, लेकिन सही मायने में इस प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु शिक्षक होता है।

प्राचीन काल में शिक्षक का चयन प्रायः परिस्थितियों से निर्धारित किया जाता था। उस समय यद्यपि शिक्षकों के गुणों का विश्लेषण नहीं किया जाता था फिर भी कुछ ऐसे ही व्यक्ति शिक्षक बनते थे जिनमें शिक्षण कार्य के लिए कुछ प्रवृत्तियाँ या अभियोग्यताएं होती थीं। इनमें ज्ञान एवं नेतृत्व सामान्य गुण रहते थे। समाज के विकास के साथ–साथ शिक्षकों की आवश्यकताएँ बढ़ती गई और शिक्षण का उद्देश्य एवं स्वरूप भी परिवर्तित होता गया। मध्यकाल में प्रायः यह एक व्यवसाय बन गया। उसके बाद शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे लोग आये जिनमें इसके लिए कोई विशेष अभियोग्यता नहीं थी। किसी अन्य व्यवसाय में कोई अवसर न मिलने के कारण वे अध्यापन में आने लगे। इस कारण शिक्षा की प्रक्रिया में बहुत से दोष आ गये।

विद्यार्थियों तथा समाज को सही रास्ता दिखाने का पवित्र कार्य अध्यापक का होता है। वह निःस्वार्थ भाव से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करता है। लेकिन अनेक विद्वानों ने अपने अनुभव व सर्वेक्षण के उपरान्त यह निष्कर्ष निकाला है कि अध्यापक में जैसे–जैसे अनुभव बढ़ता जाता है, वैसे ही उसमें शिक्षण की प्रक्रिया में नये प्रयोगों के प्रति उदासीनता आने लगती है। वह इसे एक रूटीन कार्य की तरह करता जाता है, जबकि एक उद्योग में अनुभव के बढ़ने पर कुशलता में वृद्धि का होना स्वाभाविक रूप से स्वीकार किया जाता है। अध्यापक के विषय में कहा जाता है कि चालीस वर्ष की आयु के पश्चात् अध्यापक के अन्दर का अध्यापक मरने लगता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, अध्यापक की जबाबदेही तय करने पर इस दृष्टिकोंण से भी बल देती है कि अध्यापक में उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करने हेतु एक निश्चित मानक हो व उनके उत्तरदायित्व को सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

अध्यापक में उत्तरदायित्व की समस्या का जन्म विनाशकारी महामारी के कीटाणुओं के जन्म के समान है क्योंकि इस स्तर पर उत्पन्न समस्या समाज के प्रत्येक स्तर तक तीव्रता से फैलती है एवं युवा वर्ग पर इसका सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। समाज का कोई भी अंग अध्यापक उत्तरदायित्व की समस्या से अछूता नहीं रहता। अतः माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यों को वास्तविक रूप से प्राप्त करने हेतु प्रथम व सर्वाधिक महत्वपूर्ण शर्त माध्यमिक विद्यालयी अध्यापक में उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करने की है। यदि उत्तरदायित्व की भावना ट्ध्यापक में उत्पन्न होगी तो वे अपने कर्तव्यों के प्रति जागरुक होंगे और समाज की उन्नति में योगदान दे सकेंगे साथ ही अपने कर्तव्यों का निर्वहन भी पूर्ण जिम्मेदारी से कर सकेंगे।

परिवर्तन प्रकृति तक ही सीमित नही है। समाज में भी प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है। पुरानी मान्यताओं का स्थान नवीन मान्यतायें ले रही हैं। पुरातन विचार जा रहे हैं, नूतन विचार आ रहे हैं। पुरातन मूल्यों का स्थान, नूतन मूल्य ग्रहण कर रहे हैं। जल स्थिर रहेगा, तो जल सड़ेगा ही। यदि जल का प्रवाह जारी रहेगा– अर्थात् पुराने जल का स्थान, नया जल लेता रहेगा, तो जल शुद्ध बना रहेगा। इसी प्रकार जो समाज स्थिर, यथावत स्थिति में बना रहना चाहता है, नवीन विचारों को ग्रहण नहीं करता है, वह जीवित नहीं रह सकता। नये–नये विचारों को ग्रहण करने से समाज को नया जीवन प्राप्त होता है। उसमें नयी स्फूर्ति आती है और वह सदा अग्रणी स्थान प्राप्त करता है। वर्तमान युग विज्ञान का युग है। इससे

प्रत्येक क्षेत्र की कार्य प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन आया है। शिक्षण की वैज्ञानिक विधियों एवं संसाधनो ने शिक्षा के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है। ज्ञान– विज्ञान के इस युग में हर क्षेत्र में परिवर्तन–युक्त नित नये–नये अविष्कार हो रहे हैं जिसकी अपनी गरिमा एवं महत्व है। समाज के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन युक्त नवीन विचारों एवं अविष्कारों को आत्मसात् करने से इन सबको नयी स्फूर्ति, नया स्वरूप एवं विकास के नये रास्ते मिले हैं।

मनुष्य की बढ़ती भौतिक आवश्यकताएँ, समय का अभाव एवं धन इकठ्ठा करने की लालसा ने शिक्षा के वर्तमान स्वरूप में आमूल–चूल परिवर्तन ला दिया है। शिक्षा को समय सापेक्ष बनाने के लिए इसमें नवाचारों का उदय हुआ है। विद्यालय, समाज तथा टध्यज्ञप्क के लिए विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि एक महत्वपूर्ण कारक है। शैक्षिक उपलब्धि जहाँ अध्यापक की गुणवत्ता को उजागर करती है वहीं यह विद्यालय की प्रतिष्ठा एवं समाज की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। यदि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षानुकूल नहीं होती है तो विद्यालय एवं अध्यापक के कार्य को सार्थक नहीं माना जा सकता है।

प्रस्तुत शोध का महत्व

स्वतन्त्रता के पश्चात देश का सम्पूर्ण परिवेश बदल गया व इससे शिक्षा भी अछूती नहीं रही। लोगों के दृष्टिकोंण में परिवर्तन हुआ एवं नई आर्थिक सामाजिक व्यवस्थाओं का नैतिक पतन एक सामान्य घटना बन गई। चारित्रिक मूल्यों का स्थान शनैः शनैः मौद्रिक मूल्यों ने ले लिया। भौतिकवादी संस्कृति का तेजी से उदय हुआ और व्यक्ति अपने कर्तव्यों से विमुख होते गये। इस सबके परिणाम स्वरूप समाज के प्रत्येक वर्ग की भाँति शिक्षक वर्ग में भी उत्तरदायित्व की समस्या उत्पन्न हो गयी। अतः शिक्षकों में उत्तरदायित्व की भावना का मापन करने तथा उसको पुनर्जीवित करने की वर्तमान समय की आवश्यकता बन गयी।

मात्र उत्तरदायित्व का मापन करने से ही समस्या के कारणों को जानना संभव नहीं है। इसके लिए शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति उनकी अभिवृत्ति को भी समझना होगा, इसके साथ ही इन सभी कारकों का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से संबन्ध को भी जानना आवश्यक है। अतः इस संदर्भ में यह जानना आवश्यक है कि विद्यार्थियों की शैक्षक उपलब्धि का शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिब(ता, उत्तरदायित्व एवं शैक्षक नवाचारों के प्रति अभिवृत्ति में किस प्रकार का संबन्ध है। समस्या के प्रमुख कारण कौन–कौन से हैं ? तथा इसका समाधान किस प्रकार किया जा सकता है?

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत अध्ययन में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से संबन्धित कारकों जैसे– शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता, उनमें उत्तरदायित्व की भावना तथा उनकी शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृत्ति का मापन करने तथा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ इन कारकों के संबन्ध को जानने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन की वर्तमान में आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि यह शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अधिक से अधिक प्रभावी बनाने हेतु शिक्षकों को अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध बनाने के प्रभावशाली उपाय खोजने की आवश्यकता पर बल देता है। इसके अलावा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने हेतु शिक्षकों में उत्तरदायित्व की भावना का विकास करने एवं शैक्षिक नवाचारों के प्रति उनकी अभिवृत्ति को सकारात्मक बनाने की आवश्यकता को उजागर करता है। संक्षेप में, प्रस्तुत अध्ययन पूर्णतया प्रासंगिक है एवं वर्तमान समय में इसके अध्ययन की आवश्यकता है।

समस्या कथन

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृति, उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन

शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

शैक्षिक नवाचार

विश्व में वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टि से शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि करने तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सरल एवं सुगम बनाने हेतु शिक्षा के क्षेत्र में विज्ञान एवं तकनीकी के प्रयोग को प्रस्तुत शोध में शैक्षिक नवाचार कहा गया है।

अभिवृत्ति

अभिवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति के उस दृष्टिकोंण से होता है जिसके कारण वह किसी व्यक्ति, वस्तु, विचार आदि के प्रति किसी विशिष्ट प्रकार का व्यवहार करता है। प्रस्तुत शोध में अभिवृत्ति से तात्पर्य अध्यापक एवं शिक्षिकाओं का शैक्षिक नवाचारों के प्रति दृष्टिकोंण से है।

उत्तरदायित्व

उत्तरदायित्व का अर्थ होता है–ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा तथा अपने कार्य के प्रति जबावदेही। टध्यज्ञप्क उत्तरदायित्व से तात्पर्य अध्यापक की अपने व्यवसाय, विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा समाज के प्रति जबावदेही से है।

व्यावसायिक प्रतिबद्धता

व्यावसायिक प्रतिबद्वता से तात्पर्य चयनित टध्यापक की अपने व्यवसाय के प्रति समर्पण की भावना से है।

शिक्षक

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अध्यापक से तात्पर्य राजकीय अथवा गैर–राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं शिक्षिकाओं दोंनों से है।

विद्यार्थी

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों से तात्पर्य ऐसे छात्र एवं छात्राओं से है जो अंग्रेजी विषय के साथ 9वीं कक्षा में अध्ययनरत् हैं तथा 9वीं कक्षा की अर्द्धवार्षिक परीक्षा में सम्मिलित हो चुके हैं।

शैक्षिक उपलब्धि

विद्यार्थी द्वारा विभिन्न विषयों में सीखे गये ज्ञान एवं व्यवहार परिवर्तनों के मात्रात्मक मापन को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में माना जाता है। प्रस्तुत शोधकार्यमें माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल एवं अभिक्षमता में विकास एवं परिवर्तन को उनकी शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक नवाचारों के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के उच्च उत्तरदायित्व रखने वाले टध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा निम्न उत्तरदायित्व रखने वाले टध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी –समूह की शैक्षिक उपलब्धि में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के उच्च व्यावसायिक प्रतिबद्धता रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा निम्न व्यावसायिक प्रतिबद्धता रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकपनाएँ

- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक नवाचारों के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के उच्च उत्तरदायित्व रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा निम्न उत्तरदायित्व रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी –समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के उच्च व्यावसायिक प्रतिबद्धता रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा निम्न व्यावसायिक प्रतिबद्धता रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में राजस्थान के श्री गंगानगर जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कुल 200 अध्यापक एवं 200 विद्यार्थियों पर किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

- शिक्षक शैक्षिक नवाचार अभिवृत्ति मापनी (स्वनिर्मित)
- शिक्षक उत्तरदायित्व मापनी (स्वनिर्मित)
- शिक्षक व्यावसायिक प्रतिबद्धता मापनी' (2011) डॉ. रविन्दर कौर, डॉ. सरबजीत कौर 'रानू' एवं श्रीमती सरवजीत कौर बराड़
- शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण

प्रदत्तों का विश्लेषण व विवेचन

- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक नवाचारों के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 1

संस्थान	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
उच्च उत्तरदायित्व रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह	100	74.97	9.231	1. 269	स्वीकृत
निम्न उच्च उत्तरदायित्व रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह	100	72.99	12.575		

व्याख्या

परिकल्पना संख्या 1 के अनुसार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे शैक्षिक नवाचारों के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर देखने हेतु विश्लेषित आकड़ों के आधार पर टी का मान ज्ञात किया गया जिसके अनुसार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे शैक्षिक नवाचारों के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व प्रमाप विचलन के आधार पर प्राप्त टी मान सार्थकता के स्तर 0.01 के सारणी मान से कम है। अतः यहाँ पर निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे शैक्षिक नवाचारों के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के उच्च उत्तरदायित्व रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा निम्न उत्तरदायित्व रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी –समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 2

संस्थान	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
उच्च उत्तरदायित्व रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह	100	80.55	10.763	9. 510	अस्वीकृत
निम्न उत्तरदायित्व रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह	100	68.78	6.129		

परिकल्पना संख्या 2 के अनुसार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे उत्तरदायित्व के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा उत्तरदायित्व के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर देखने हेतु विश्लेषित आकडों के आधार पर t का मान ज्ञात किया गया जिसके अनुसार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे उत्तरदायित्व के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा उत्तरदायित्व के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व प्रमाप विचलन के आधार पर प्राप्त टी मान सार्थकता के स्तर 0.01 के सारणी मान से अधिक है। अतः यहाँ पर निर्धारित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे उत्तरदायित्व के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा उत्तरदायित्व के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के उच्च व्यावसायिक प्रतिबद्धता रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा निम्न व्यावसायिक प्रतिबद्धता रखने वाले अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 3

संस्थान	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
उच्च उत्तरदायित्व रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह	100	77.24	9.965	4. 794	अस्वीकृत
निम्न उत्तरदायित्व रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह	100	71.39	7.034		

परिकल्पना संख्या 3 के अनुसार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर देखने हेतु विश्लेषित आकड़ों के आधार पर टी का मान ज्ञात किया गया जिसके अनुसार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व प्रमाप विचलन के आधार पर प्राप्त टी मान सार्थकता के स्तर 0.01 के सारणी मान से अधिक है। अतः यहाँ पर निर्धारित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

उपयोगिता

- शैक्षिक नवाचार को अपनानाः नवीन शिक्षण विधियों और तकनीकों को अपनाने के लिए तैयार रहें। इससे छात्रों की सीखने की क्षमता में वृद्धि होगी। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में समयबद्ध परिणामोन्मुखी साक्षरता कार्यक्रमों की प्रभावी क्रियान्वित हेतु सक्रिय कदम उठाए जाए।
- प्रशिक्षण और विकासः शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करें जो शैक्षिक नवाचार और व्यावसायिक प्रतिब(ता पर केंद्रित हों।
- नीतियों का विकासः शैक्षिक नवाचार और व्यावसायिक प्रतिबद्धता को प्रोत्साहित करने के लिए विद्यालय की नीतियों का विकास करें।

भावी शोध हेतु सुझाव

- न्यादर्श के लिए बड़े न्यादर्श का चयन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को ही शामिल किया है। आगामी शोध के लिए अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को लेकर शोध कार्य किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

- अग्रवाल, आई.पी. ;1988द्ध. रिसचेर्ज इन इमर्जिंग फील्ड्स् ऑफ एजूकेशन :कान्सेप्ट्स, ट्रेन्डस एण्ड प्रासपैक्ट्स. नई दिल्लीः स्टर्लिंग पब्लिशर्स कपिल, एच. के. (2006), सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।
- पाण्डे डी. के. (2009) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावकों के शैक्षिक, सामाजिक व आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में उनके धर्मनिरपेक्षता व शैक्षिक नवाचार के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, जिज्ञासा, अंक 2 दिसम्बर, 2010, वाराणसी, पृष्ठ संख्या 33–39,

- कृष्णलाल ''इमोशनल मैच्यूरिटी सेल्फ कोनफिडेन्स एण्ड एकेडमिक एचिवमेन्ट ऑफ एडोलसेन्स इन रिलेशन टू देयर जेन्डर एण्ड अरबन रूरल बैकराउण्ड '' ।ष्श्रत क्मब. 2015
- डॉ. अरोड़ा रीता, सुदेश मारवाह (2005) '' शिक्षा मनो विज्ञान एवं सांख्यिकी'' शिक्षा प्रकाशन जयपुर पृश्ठ संख्या (407–430)
- डॉ. शर्मा, वी. एस. ''शिक्षा मनोविज्ञान'' साहित्य प्रकाशन आगरा (2004)
- सुखिया, एस.पी. (1990) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- श्रीमती शर्मा आर. के. व दुबे कृष्ण, श्रीमती बरौलिया डॉ. ए. ''शिक्षा के मनावैज्ञानिकीय आधार'' राधा प्रकाशन मन्दिर आगरा, पृष्ठ सं. 239,240